आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023
Received: 10/09/2023; Published: 24/09/2023

कहानी

किस्सा-ए-सर्टिफिकेट - भाग-दो

- रिम्पू सिंह 'सुभाषिनी'
गाजीपुर (उ॰प्र॰)

रिम्पू सिंह 'सुभाषिनी', **किस्सा-ए-सर्टिफिकेट** ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023,(446-448)

सूक्ति के मन में अनेक विचार आते रहते थे कि शायद मिथ्या को किसी बात का घमण्ड हो गया है। वह मुझसे ज़बरदस्ती अपनी आदर करवाना चाहती है, या अपने आगे सबको झुकाना, शायद मिथ्या को पसंद हो, परन्तु सूक्ति को किसी चीज़ से कोई मतलब नहीं था बस यह चाहती थी कि उसको उसका सर्टिफिकेट मिल जाये। आख़िर वो सूक्ति का सर्टिफिकेट क्यूँ नहीं देना चाहती थी। अघोष जी को कई बार कॉल और मैसेज करने के बाद भी जबाव न पाकर वह काफी आहत हुई और एक मैसेज और लिखकर भेजने की इच्छा से उसने लिखा- "महोदय आप मेरे फोन और मैसेज की अनदेखी न करें, कृपया मुझे जबाब दें या बात करें।"

थोड़ी देर बाद मोबाइल स्क्रीन पर अघोष जी का नंबर देखकर उसने थोड़ी राहत की साँस लेते हुए फोन रिसीव किया। अघोष जी ने अपनी व्यस्तता का हवाला देते हुए कहा- " सूक्ति मैंनें मिथ्या से तीन बार बात की परन्तु वह मुझे सर्टिफिकेट देने को तैयार नहीं हुई।"
"आखिर वह चाहती क्या है?" सूक्ति ने थोड़ा मायूस होते हुए कहा। अघोष जी ने कहा- वह चाहती है, आप उससे क्षमाँ याचना करके बोले कि "दीदी! मेरा सर्टिफिकेट मुझे दे दीजिए।"
सूक्ति ने सौम्यता से कहा- "आप जानते है महोदय, मेरी गलती होती तो मैं क्षमाँ माँग भी लेती, परन्तु बिना किसी गलती के यह मेरे लिए सम्भव नहीं है।

अघोष जी बोले- "मैनें अपना प्रयास कर लिया है, ऐसी महिला मैंने अपने अब तक के जीवन में नहीं देखी, आप जहाँ चाहे उसकी शिकायत कर सकती हैं ; और हाँ ! मैं आपका सहयोग करने को तैयार हूँ। सूक्ति ने दृढ़ता से कहा- " मैंने जनपद के मुखिया को प्रार्थना पत्र देने का निर्णय किया है, बस आपके जबाब की प्रतीक्षा में थी।

सूक्ति ने एक प्रार्थना पत्र लिखा और अपने कुछ मित्रों से उसे दिखाया क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि उसमें कोई त्रुटि रह जाये। उस पत्र को उसने अपनी एक मित्र को भेजकर पूछा कि इसे पढ़कर कोई त्रुटि हो तो बताएँ। वह उनका बहुत आदर करती थी और उनकी सलाह को बेहतरीन मानती थी। पत्र पढ़कर उसकी मित्र नित्या ने उसे फोन किया और बोली-"सूक्ति ! तुम करना क्या चाहती हो?" यह प्रश्न सुनकर वह बहुत विस्मित होते हुए बोली –"मैं आपको सब बातें पहले ही बता चुकी हूँ ,मुझे अपना सर्टिफिकेट चाहिए और कुछ नहीं और अब मुझे यही उचित लग रहा है।

"ये सब मुझे थोड़ा अनुचित लग रहा है।" नित्या ने कहा।

सूक्ति-आप ही बताएँ ,क्या करूँ?

नित्या कहने लगी-"मान लो तुम छत पर खड़ी हो, और तुम्हें बागीचे में जाना है, तो तुम क्या करोगी? "

सूक्ति मृदु स्वर में बोली-" छत से नीचे उतरकर, बागीचे में जाऊँगी।

"तुम्हारी जगह यदि कोई परिंदा हो तो वह कैसे जाएगा?" नित्या ने हँसते हुए कहा।

सूक्ति ने तुरंत कहा- "उड़कर, परन्तु आप कहना क्या चाहती हैं , सीधे शब्दों में कहें पहेलियाँ न बुझाएँ।"

नित्या ने कहा-" बिना मतलब ये सब मत करो, और सब मुझ पर छोड़ दो, तुम्हारा सर्टिफिकेट तुम्हें मिल जाएगा।

सूक्ति को कुछ समझ नहीं आ रहा था, उलझना उसे भी पसंद नहीं था परन्तु उसका मानना था कि जिन्दा हो तो जिन्दा नज़र भी आना चाहिए? कोई बिना मतलब उसे परेशान करे तो वह क्या करें। अगले दिन नित्या का फोन आया और उसने कहा कि- "तीन दिन बाद स्वयं मिथ्या तुम्हें तुम्हारा सर्टिफिकेट दे देगी।" उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा और बोली-"ऐसा क्या जादू कर दिया आपने भई !"

आत्मविश्वास से पूर्ण नित्या बोली- " जब वह देने आएगी तो तुम्हें सब पता चल जायेगा।"

शाम का समय था,सूक्ति अपनी एक मित्र से फोन पर बात कर रही थी बातों का सिलसिला नित्या और उनकी बातों के इर्द-गिर्द ही चल रहा था कि मिथ्या का मैसेज आया, उसने लिखा था, "सूक्ति जी परसों सेमिनार में मैं आऊँगी तो आपका सर्टिफिकेट दे दूँगी, अगर आप न आ पायें तो वही संस्थान में प्रशिक्षक को दे दूँगी आप उनसे ले लीजिएगा।" इतने आदर सूचक शब्द देखकर सूक्ति आश्चर्यचकित हो गयी और उस दिन का बेसब्री से इंतजार करने लगी।

सेमिनार के दिन सूक्ति को अचानक पेट में दर्द होने लगा और उसकी तबियत काफी ढीली हो गई, परन्तु फिर भी वह संस्थान में गई वहाँ गई तो सेमिनार में उपस्थित साथियों से पूछने पर मालूम हुआ कि मिथ्या वहाँ आयी ही नहीं। सेमिनार समाप्त होते ही वह प्रशिक्षक के पास पहुँची तो उसका सर्टिफिकेट बकायदा फोल्डर में उनकी टेबल पर पड़ा था।उसे देखते ही प्रशिक्षक ने फोल्डर देते हुए कहा-"किसी आवश्यक कार्य वश मिथ्या आ नहीं पायी है,उसने आपका सर्टिफिकेट किसी से भेजा है।ये रही आपकी अमानत।" उनसे सर्टिफिकेट लेकर सूक्ति ने बड़े प्यार से उसे निहारा और खुशी-खुशी घर वापस आ गई। नित्या को फोन कर सूचित किया तो उसने उसे एक धन्यवाद नोट लिखकर भेजने को कहा, और बताया कि विभाग के एक सज्जन अधिकारी के कृपा से यह कार्य सम्पन्न हुआ है।

धन्यवाद नोट लिखकर भेजने के दो दिन बाद नित्या ने सूक्ति से कहा- " 'एक धन्यवाद मिथ्या को भी दे देना।" सूक्ति की इच्छा तो नहीं थी परन्तु वह नित्या की बात को टाल भी नहीं सकती थी और उसने मिथ्या को एक धन्यवाद नोट भेजा। मिथ्या ने जबाब में एक स्माइली भेजी।

सूक्ति के शुभचिंतकों में खलबली मची हुई थी, सारी बाते जानने की और यह भी कि कैसे मिथ्या ने स्वयं सूक्ति को सर्टिफिकेट दिया, क्योंकि सभी उसके व्यवहार से परिचित थे, परन्तु उसने चुप्पी साध ली थी। सूक्ति को थोड़ा अफसोस था कि मिथ्या ने मेरा सर्टिफिकेट आसानी से दे दिया होता तो रिश्ते अच्छे रहते। आख़िर क्यूँ नहीं देना चाहती थी? आ़खिर दबाव में आकर ही सही सर्टिफ़िकेट दिया तो ।वह सोच रही थी कि क्या मिथ्या को अपनी गलती का एहसास हो पाएगा?

सूक्ति को सर्टिफिकेट तो मिल गया ,परन्तु उसके प्रश्न का उत्तर नहीं मिला ।उसके मस्तिष्क में यह प्रश्न बार-बार घूम रहा था कि -"मिथ्या मेरा सर्टिफिकेट आखिरकार देना क्यों नहीं चाहती थी?" क्या मिथ्या तक ये कहानी पहुँच पाएगी? क्या सूक्ति को उत्तर मिलेगा? आपको क्या लगता है मिथ्या ने ऐसा क्यों किया होगा? सहृदय पाठकों से उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

****